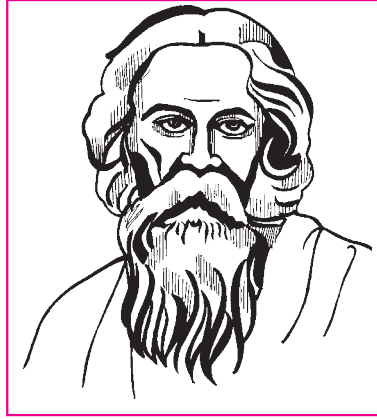




पाठ-सात

विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्मरण, संग्रह, अगाध, सानिध्य, महान, मानवतावाद, बोलबाला, अभिनव, भेंट, विभूति, जमींदारी, ग्राम्य-वातावरण, सद्गुण।



“गीतांजलि” और “विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन” का नाम आते ही, ऐसा कौन है, जिसे विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्मरण न आता हो। “गीतांजलि” रवीन्द्रनाथ के भाव भरे गीतों का संग्रह है। इसकी रचना 1909-10 ई. में हुई थी और सन् 1913 ई. में इसी पुस्तक के लिए उन्हें “नोबल पुरस्कार” प्रदान किया गया था।

रवीन्द्रनाथ को अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता से अगाध प्रेम था। वे बन्द कमरों के बजाय प्राचीन गुरुकुलों की भाँति मुक्त वातावरण में शिक्षा देने के लिए भी समर्थक थे। वे मानते थे कि प्रकृति के सानिध्य में प्राप्त ज्ञान मनुष्य को सद्गुणों से पूर्ण बनाता है। रवीन्द्रनाथ को पेड़-पौधों के बीच अपूर्व आनन्द मिलता था। वे चाहते थे कि शिक्षा का एक ऐसा केन्द्र बनाया जाए, जहाँ खुले आकाश के नीचे प्राकृतिक वातावरण में पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था हो। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ने कोलकाता के कोलाहल से दूर बोलपुर में निवास करने के लिए जमीन मोल ली थी। रवीन्द्रनाथ ने पिता से अनुमति लेकर वहीं सन् 1901 में शांति-निकेतन की स्थापना की। जब उन्होंने प्रकृति की गोद में छात्रों को पढ़ाना

शुरू किया तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। यही शांतिनिकेतन विश्व-भारती के रूप में एक प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था का जन्मदाता बना, जिसमें आज भी विदेशों से सैकड़ों छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करने आते हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, सन् 1861 को हुआ। उनका परिवार कोलकाता के समाज में बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। रवीन्द्रनाथ जब छोटे ही थे, तो कोलकाता में छूत की बीमारी फूट पड़ी। इससे डरकर पिता ने उन्हें बोलपुर नामक गाँव में भेज दिया। वहीं उनका प्रकृति से परिचय हुआ। उनके बाल-मन पर प्रकृति का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जीवन भर अपने साहित्य में प्रकृति के विविध रूपों में चित्रित करते रहे। प्रकृति ने ही उन्हें जीवन का सच्चा अर्थ समझाया।

रवीन्द्रनाथ को कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेजा गया, किन्तु उसमें उन्हें कोई रस नहीं आया। इंग्लैण्ड में रहते हुए रवीन्द्रनाथ ने अंगरेजी भाषा और साहित्य के अध्ययन में समय व्यतीत किया तथा स्वाधीनता का महत्व समझा। भारत लौटते ही उन्हें जमींदारी की देखभाल के लिए गाँव भेजने का निश्चय किया गया। रवीन्द्रनाथ ने सोचा कि इस बहाने उन्हें प्रकृति के निकट रहने का अवसर मिलेगा; अतः वे खुशी-खुशी तैयार हो गए। ग्राम्य-वातावरण में रहकर उन्होंने प्रकृति का आनन्द ही नहीं उठाया, बल्कि किसानों और अन्य साधारण लोगों के दुख-दर्द को भी निकट से देखा। अब वे पूरी तरह साहित्य-साधना में लग गए।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की रचना करके बंगला भाषा और साहित्य की महान सेवा की। आगे चलकर वे विश्व-कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। “काबुलीवाला” उनकी कहानियों में विशेष स्थान रखती है। उनका उपन्यास “गोरा” भी सब को प्रभावित करता है। रवीन्द्रनाथ के साहित्य में प्रकृति-प्रेम और मानवतावाद का बोलबाला है।

सन् 1915 ई. में रवीन्द्रनाथ की भेंट गांधीजी से हुई। गांधीजी शांतिनिकेतन में शिक्षा का अभिनव प्रयोग देखने आए थे। जब दोनों महान विभूतियाँ आमने-सामने हुईं तो एक आश्चर्यजनक घटना घटी। रवीन्द्रनाथ ने गांधीजी को “महात्मा” कहकर सम्बोधित किया और गांधीजी ने रवीन्द्रनाथ को “गुरुदेव” कहकर पुकारा। तभी से ये दोनों शब्द विश्व के इन दो महान लोगों के नामों के साथ जुड़ गए।

हमारे देश के राष्ट्र-गान की रचना विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ही की थी।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

स्मरण	=	स्मृति, याद।
अगाध	=	अपार, अथाह, अधिक।
सानिध्य	=	सामीप्य, नजदीकी।
मानवतावाद	=	मनुष्यता की विचार-धारा।
बोलबाला	=	मान, प्रतिष्ठा वाला।
अभिनव	=	नया, ताजा।
विभूति	=	शक्ति, शक्ति-सम्पन्न।

2. उत्तर दीजिए :

- (क) “गीतांजलि” क्या है ?
- (ख) “गीतांजलि” की रचना कब हुई थी ?
- (ग) रवीन्द्रनाथ को कब किसके लिए “नोबल पुरस्कार” मिला था ?
- (घ) रवीन्द्रनाथ को किससे अगाध प्रेम था ?
- (ङ) रवीन्द्रनाथ किसके समर्थक थे ?
- (च) रवीन्द्रनाथ क्या चाहते थे ?
- (छ) रवीन्द्रनाथ ने कब और कहाँ शांति-निकेतन की स्थापना की थी ?
- (ज) रवीन्द्रनाथ का जन्म कब हुआ था ?
- (झ) किस कारण से पिता ने रवीन्द्रनाथ को बोलपुर गाँव में भेज दिया ?
- (ञ) रवीन्द्रनाथ को उच्च शिक्षा के लिए कहाँ भेजा गया ?
- (ट) जमींदारी की देखभाल के लिए गाँव भेजते समय रवीन्द्रनाथ ने क्या सोचा ?
- (ठ) ग्राम्य-वातावरण में रहकर रवीन्द्रनाथ ने कौन-सा अनुभव प्राप्त किया ?
- (ड) रवीन्द्रनाथ ने अपनी भाषा और साहित्य की सेवा कैसे की ?
- (ढ) गांधीजी शांति-निकेतन में क्यों आए थे ?

- (ण) रवीन्द्रनाथ और गांधीजी एक दूसरे को क्या कहकर सम्बोधित करते थे ?
 (त) राष्ट्र-गान की रचना किसने की ?
 (थ) हमारे देश के राष्ट्र-गान के बारे में आपके विचार प्रकट कीजिए।
 (द) मणिपुरी भाषा के कुछ प्रसिद्ध लेखकों के नाम बताइए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

स्मरण -----
 अगाध -----
 सानिध्य -----
 व्यतीत -----
 ग्राम्य -----
 बोलबाला -----
 अभिनव -----
 सम्बोधित -----

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड “क” तथा “ख” के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
रवीन्द्रनाथ को पेड़-पौधों के बीच बोलपुर में रवीन्द्रनाथ का रवीन्द्रनाथ पूरी तरह आगे चल कर रवीन्द्रनाथ राष्ट्रगान की रचना	रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। साहित्य-साधना में लग गए। विश्व-कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। प्रकृति से परिचय हुआ। अपूर्व आनन्द मिलता था।

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) रवीन्द्रनाथ को प्राचीन संस्कृति और सभ्यता से अगाध प्रेम था। ☐
- (ख) देवेन्द्रनाथ ने बोलपुर में शांति-निकेतन की स्थापना की। ☐
- (ग) पिता ने रवीन्द्रनाथ को जमींदारी की देखभाल के लिए गाँव भेजा। ☐
- (घ) रवीन्द्रनाथ ने गाँव में साधारण लोगों के दुख-दर्द को निकट से देखा। ☐
- (ङ) गांधीजी ने रवीन्द्रनाथ को “गुरुदेव” कहकर पुकारा। ☐

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) “को” का प्रयोग प्रायः सजीवों के साथ होता है, निर्जीवों के साथ प्रायः नहीं।

जैसे –

माँ हमको खिलाती है।	माँ खाना खिलाती है।
अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।	अध्यापक पुस्तक पढ़ते हैं।
उन्होंने हमको देखा।	उन्होंने चित्र देखा।

(ख) किन्तु कभी-कभी सजीवों के साथ “को” का प्रयोग नहीं होता। जैसे –

मैंने साँप देखा।
हमने एक पागल आदमी देखा।
वह मछली पकड़ता है।

(ग) जहाँ कर्म पर जोर देना हो, वहाँ “को” का प्रयोग होता है। जैसे –

मैं इस सेव को खाऊँगा।
हमने इस कमरे को साफ किया।

(घ) यदि वाक्य में दो कर्म हों तो सजीव कर्म में “को” लगता है और निर्जीव में नहीं लगता।

जैसे –

उसने अपने पिता को सारी बातें बता दीं।

अध्यापक छात्रों को गणित पढ़ाते हैं।

अमीर ने गरीब को दान दिया।

तोम्बा ने अचौ को पुस्तक दी।

इस प्रकार के वाक्यों में “को” लगने वाला सजीव कर्म गौण कर्म है और बिना “को” का निर्जीव कर्म मुख्य कर्म है।

7. सही जगह “को” का प्रयोग कीजिए।

(क) राम हुसैन बुलाता है।

(ख) गायक हम गीत सुनाता है।

(ग) मालिक ने नौकर बहुत डाँटा।

(घ) उसने बैल मारा।

(ङ) माँ बच्चे दूध पिलाती है।
